



अण्डमान निकोबार द्वीप समाचार



रजि.न.34300/80

संख्या 235

श्री विजय पुरम, बुधवार, 02 सितम्बर 2026

web: dt.andamannicobar.gov.in

2.00 रूपए

मायाबंदर क्षेत्र सहित 42 किसानों के लिए प्राकृतिक खेती पर प्रशिक्षण शुरू



श्री विजय पुरम, 1 सितंबर।

उत्तर व मध्य अण्डमान जिलों के किसानों के लिए प्राकृतिक खेती पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आज आईसीएआर-कृषि विज्ञान केंद्र (केवीके), श्री विजय पुरम के प्रशिक्षण हॉल में शुभारंभ किया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन अण्डमान तथा निकोबार प्रशासन के कृषि विभाग द्वारा आईसीएआर-कृषि विज्ञान केंद्र (केवीके), कृषि प्रौद्योगिकी प्रबंधन एजेंसी (एटीएमए) तथा राष्ट्रीय प्राकृतिक खेती मिशन (एनएमएनएफ) के सहयोग से किया जा रहा है। यह कार्यक्रम कृषि प्रौद्योगिकी प्रबंधन एजेंसी (एटीएमए) के साथ समन्वय में एनएमएनएफ के तहत आयोजित किया जा रहा है। इसका उद्देश्य किसानों को ऐसी प्राकृतिक खेती पद्धतियों को अपनाने के लिए व्यावहारिक ज्ञान, तकनीकी कौशल एवं प्रत्यक्ष अनुभव प्रदान करना है, जो कम लागत वाली, टिकाऊ तथा स्थानीय कृषि परिस्थितियों के अनुकूल हों।

कार्यक्रम का उद्घाटन मुख्य अतिथि कृषि निदेशक श्री देबब्रत बसंतिया तथा विशिष्ट अतिथि आईसीएआर-सीआईएआरआई के निदेशक डॉ. जय सुंदर की उपस्थिति में किया गया। इस अवसर पर डॉ. वाई. रामकृष्ण, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रमुख, आईसीएआर-कृषि विज्ञान केंद्र तथा नोडल अधिकारी, एनएमएनएफ, आईसीएआर-कृषि विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिक एवं विषय विशेषज्ञ, कृषि विभाग के अधिकारी, एटीएमए के पदाधिकारी तथा प्रशिक्षण में भाग लेने वाले किसान भी उपस्थित रहे।

किसानों को संबोधित करते हुए कृषि निदेशक ने करेन धान के महत्व पर प्रकाश डाला, जिसे हाल ही में भौगोलिक संकेतक (जीआई) मान्यता प्राप्त हुई है और जिसे द्वीप सुगंध 1 पहल के अंतर्गत भी शामिल किया गया है। उन्होंने किसानों को बेहतर उत्पादन प्राप्त करने के साथ-साथ मृदा स्वास्थ्य एवं दीर्घकालिक स्थिरता बनाए रखने के लिए धान की खेती में उचित फसल प्रबंधन तकनीकों के साथ प्राकृतिक खेती पद्धतियों को अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया।

आईसीएआर-सीआईएआरआई के निदेशक डॉ. जय सुंदर ने कहा कि प्राकृतिक खेती पद्धतियों को अपनाने से स्वस्थ किसान, स्वस्थ मिट्टी और स्वस्थ पर्यावरण को बढ़ावा देने में योगदान मिल सकता है।

प्रशिक्षण कार्यक्रम के पहले दिन 'करके सीखने' की पद्धति पर विशेष ध्यान दिया गया। इसके तहत पंचगव्य, नीमास्त्र, जीवामृत और बीजामृत जैसे महत्वपूर्ण प्राकृतिक खेती जैव-आदान तैयार करने एवं उनके उपयोग से संबंधित प्रदर्शन और व्यावहारिक सत्र आयोजित किए गए। किसानों को फसल उत्पादन में इन जैव-आदान के महत्व, इन्हें तैयार करने की विधियों तथा इनके प्रयोग के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान की गई।

यहां प्राप्त प्रेस विज्ञप्ति में बताया गया कि कार्यक्रम में कुल 42 किसान भाग ले रहे हैं। प्रतिभागियों में मुख्य रूप से मायाबंदर क्षेत्र के किसान तथा प्राकृतिक खेती क्लस्टरों के अंतर्गत आने वाले अन्य क्षेत्रों के किसान शामिल हैं।